# कपास नई खोज़

भा.कृ.अनु.प. - केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक संवाद-पत्र

देखें: www.cicr.org.in

अंक: 4 खंड: 3 मार्च 22-28, 2015


## केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर में गैर बीटी बिनौला पर संगोष्ठी सह कार्यशाला

"गैर बीटी बिनौला" पर दो दिवसीय संगोष्ठी सह कार्यशाला जैविक और निष्पक्ष व्यापार कपास सचिवालय (ओ.एफ.सी.एस.) एवं के.क.अ.सं नागपुर द्वारा दि. 24-25, मार्च, 2015 को के.क.अ.सं, नागपुर में आयोजित किया गया था । इस कार्यशाला में जैविक कपास हितधारकों, जैविक कपास किसानों एवं के.क.अ.सं, के वैज्ञानिकों ने भाग लिया । डॉ. के.आर. क्रांति, निदेशक, के.क.अ.सं, नागपुर ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया । श्रीमती. प्रभा नागराजन ने कार्यशाला के कार्यसूची के संबंध में, मुख्य रूप से मुद्दों जैसे गैर बीटी बनौले की उपलब्धता और उत्पादन के बारे में संक्षिप्त विवरण दिया । डॉ क्रांति ने अपनी प्रस्तुति में देश के वर्तमान कपास परिदृश्य का वर्णन किया । उन्होंने लंबी अवधि के कम उत्पादकता और देर से बोआई का विवरण देकर कहा कि शीघ्र परिपक्व (150 दिन की अवधि) किस्मों को अपनाकर शीघ्र बोआई लेने से कीटों एवं सूखे की समस्याओं को दूर कर सकते हैं । डॉ. संध्या क्रांति, प्रधान, फसल संरक्षण, के.क.अ.सं, नागपुर ने "जैविक कपास के लिए कीट प्रबंधन" विषय पर जानकारी प्रस्तुत की । उन्होंने कपास पारिस्थिति तंत्र में होने वाली सभी कीड़ों और बीमारियों के वर्णित किया । डॉ. सुमन बाला सिंह, प्रधान, फसल सुधार, के.क.अ.सं, नागपुर ने "भारत में कपास प्रजनन में ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य" पर एक भाषण दिया । उन्होंने हड़प्पा और मोहनजोदड़ो में देसी कपास द्वारा बने हुए कपड़े का पुरातात्विक खोदाई के बारे में उल्लेख किया । डॉ. ब्लेज डिसौसा, प्रधान, फसल उत्पादन, के.क.अ.सं., नागपुर ने के "स्थायी जैविक कपास उत्पादन के लिए पैकेज प्रथाओं" पर एक भाषण दिया । उन्होंने अंतर्निहित कीट प्रतिरोध किस्मों को उगाने के बारे में एवं जैविक प्रणाली के तहत चयनित किए गये किस्मों के महत्व पर भल दिया । अपनी मजबूती और कम आगत आवश्यकताओं के कारण देसी कपास, जैविक कपास की खेती के लिए अधिक उपयुक्त हो रहे हैं । डॉ.एम.वी.वेणुगोपालन, प्रमुख वैज्ञानिक, के.क.अ.सं, नागपुर ने जलवायु परिवर्तनशीलता और जलवायु परिवर्तन के बीच के अंतर के बारे में विचार-विमर्श किया । फसल सतत अनुकरण मॉडल जो भारतीय मौसम-विज्ञान विभाग के आधार पर विकसित (आई.एम.डी) आंकड़ों जैविक कपास की खेती के तहत मौसम/मापदंडों की भविष्यवाणी करने में सहायता की जा सकती हैं ।

श्री. अरुण अंबाटिपुडी (चेतना) ने जैविक कपास खेती की चुनौतियों पर चर्चा की विशेष रूप से किसानों को आकर्षक लेबल वाली बीटी बिनौले के पैकेट की तुलना गैर बीटी बीज को ले जाने की विश्वास दिलाने की बडी समस्या को उल्लेखित किया । श्री. धर्मेन्द्र वेले (अरविंद - कृषि) ने कहा कि जैविक कपास की खेती में गैर बीटी बीज का उपलब्धता एक बड़ी समस्या के रूप में है । "बीज उत्पादन के अनुभवों" सत्र में डॉ. राजशेखर (सी.एस.ए), डॉ. सुब्रमण्यम (ब्लूम बायोटेक), डॉ. रामप्रसाद, श्री. अविनाश कामेर्कर (प्रतिभा), श्री.योगेंद्र (बायो री) और सुश्री.लताबाई मादवी(बीज किसान) ने जैविक कपास की खेती के बारे में उनके विचारों और अनुभवों को साझा । डा. विनीता घोटमारे, प्रमुख वैज्ञानिक, के.क.अ.सं, नागपुर ने "गैर बीटी किस्मों / संकर गुणवत्ता और जैविक / अजैव तनाव के प्रतिक्रियाओं के स्पेक्ट्रम" पर प्रस्तुत किया । उन्होंने जैविक कपास की खेती हेतु उपयुक्त उत्तर, मध्य और दक्षिण क्षेत्र के लिए के.क.अ.सं, राज्य कृषि विश्वविद्यालयों द्वारा जारी की किस्मों की सूची पर चर्चा की एवं उनकी उपज के साथ-साथ, तंतु गुणवत्ता एवं कीट / रोग सहिष्णुता पर भी प्रकाश डाला । डॉ.वी.शांति, वरिष्ठ वैज्ञानिक, के.क.अ.सं, नागपुर ने पहला दिन "बीज उत्पादन -नियामक पहलुओं" पर और द्वतीय दिन "बीज उत्पादन परियोजना और बीज परीक्षण प्रक्रिया शुरू करने के बारे में दिशानिर्देश" पर व्याख्यान प्रस्तुत किया । उन्होंने बीज उत्पादन के विशिष्ट मानकों सहित बीज गुणवत्ता नियंत्रण के विधायी पहलुओं पर चर्चा की । कु.उषा., वरिष्ठ अनुसंधान सहयोगी, के.क.अ.सं., नागपुर ने "आनुवंशिक प्रदूषण- सिद्धांत एवं व्यावहारिक को संबोधित करने के लिए बीटी का पता लगाना" के संबंध में प्रस्तुत किया । समापन भाषण में श्रीमती. प्रभा नागराजन सभी वक्ताओं की सराहना की । उन्होंने उल्लेख किया कि देश में कपास की पैदावार बढ़ाने के लिए उच्च घनत्व रोपण प्रणाली उपयोगी प्रणालियों में से एक है ।

## विदाई समारोह

श्री. एस. एस.लाखे, कुशल सहायक कर्मचारी को फ़सल उत्पादन विभाग द्वारा दि. 28.03.2015 को विदाई दी गयी । डॉ. के.आर. क्रांति, निदेशक, के.क.अ.सं., नागपुर ने इस अवसर पर श्री.लाखे का बधाई दिया एवं सभी वैज्ञानिकों और विभाग के कर्मचारियॉ उपस्थित थे ।

## बैठक में सहभागिता

डॉ. नंदिनी गोक्टे नार्केडकर, प्रमुख वैज्ञानिक, के.क.अ.सं, नागपुर ने एस.ई.आर.बी (सार्ब) के तहत विशाकपट्नम में आंध्र विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित 9 वीं कार्यक्रम सलाहकार समिति में दि. 23.3.2015 को भाग लिया । उन्होंने 'कपास में इंजीनियरिंग जड़ - गाँठ प्रतिरोध – मेलोडोगैन ईन्कागनीटा के सुस्ती जीन को आर.एन.ए मध्यस्थता द्वारा गुप्त भाव देना' शीर्षक पर प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की ।

## अनुसंधान सार

**मध्य भारत में *पारासिटाईड प्सूडोलाप्टोमैस्टिक्स मेक्सिकाना* परजीवी *पाराकोकास मार्जानोटास***

*पारासिटाईड प्स्यूडोलोप्टोमास्टिक्स मेक्सिकाना* नोईस एवं शैफ़ (हैमोनोप्टोरा एनक्रिटीडी) पपीता के मीली बग *पेराकाकस मार्जिनेटस* का पराश्रयी होता है । वयस्क पारासिटाईड *पी. मार्जिनेटस* के नमूना से उद्भव है जो महाराष्ट्र के चंद्रपुर जिले के वरोरा तालुका से जमा किया गया (निर्देशांक N-20°15'37.5", E-079°02'04.5"). यह पारासिटाईड तीन पारासिटाईडस जैसे *आसौरोफागस पापायी, अनागिरास लोकी* एवं *प्सूडोलाप्टोमैस्टिक्स मेक्सिकाना* के बीच में है जो प्यूर्टो रिका से *पेराकाकस मार्जिनेटस* के नियंत्रण हेतु एन.बी.ए.आय.आर. द्वारा आयातित है । इस पारासिटाईड को *पेराकाकस मार्जिनेटस* के जैविक नियंत्रण में अच्छी क्षमता है।

वी.एस.नगरारे, बाउसाहब नाईकवाडी एवं परेश भोयार

## वैज्ञानिक साहित्य का स्कैन

**भारत 50 साल के बाद कपास के निर्माता अग्रणी ....**

यू.एस.डी.ए के प्रारंभिक अनुमान के अनुसार वर्ष 2014-15 में कपास में भारत उत्पादक अग्रणी बन जाएगी क्योंकि चीन ने अपने कपास के तहत क्षेत्र कम किया है । अनुमान किया जाता है कि भारत द्वारा 480 एल.बी के 30 मिल्लियन बेल्स का उत्पादन करने की संभावना है जबकि चीन को 30 मिल्लियन बेल्स करने का संभावना है । वर्ष 1965-66 तक संयुक्त राज्य अमेरिका कपास उत्पादन में अग्रणी थी । वर्ष 1966-67 और 1981-82 के बीच में संयुक्त राज्य अमेरिका एवं चीन के बीच में कटिन प्रतिस्पर्धा थी । वर्ष 1982-83 से वर्ष 2005-06 तक अमेरिका और भारत आगे निकलेकर चीन प्रमुख उत्पादक बनने के लिए जारी रखने लगी । वर्ष 2006-07 से भारत कपास में अग्रणी उत्पादक होकर दूसरा बड़ा स्थान में थी । वर्तमान वर्ष हेतु भारत कपास उत्पादन में चीन से आगे निकलकर विश्व के अग्रणी उत्पादक हो जाएगी ।

| देश का नाम | 1960-61 | 1961-62 | 1962-63 | 2012-13 | 2013-14 | 2014-15 |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अर्जेंटीना | 569 | 496 | 612 | 750 | 1,220 | 1,125 |
| ऑस्ट्रेलिया | 8 | 8 | 10 | 4600 | 4,100 | 2,200 |
| ब्रासिल | 1,950 | 2,525 | 2,300 | 6,000 | 8,000 | 7,000 |
| चीन | 4,900 | 3,700 | 3,400 | 35,000 | 32,750 | 30,000 |
| इजिप्ट | 2,196 | 1,542 | 2,100 | 490 | 435 | 525 |
| भारत | 4,694 | 4,109 | 4,989 | 28,500 | 31,000 | **30,500** |
| पाकिस्तान | 1,398 | 1,505 | 1,690 | 9,300 | 9,500 | 10,400 |
| संयप्कत संयुक्त राज्य अमेरिका | 14,237 | 14,283 | 14,827 | 17,314 | 12,909 | 16,084 |
| उज़्बेकिस्तान | | | | 4,500 | 4,100 | 4,000 |
| अन्य देशों | 15114 | 16398 | 17061 | 17130 | 16427 | 17539 |

स्रोत: दि.28.03.2015 के स्थिति पर यूएसडीए का अनुमान
श्री एम सबेष., वैज्ञानिकक, के.क.अ.सं, क्षे.कें, कोयंबटूर द्वारा योगदान किया गया

## प्रशिक्षण कार्यक्रम

कपास की खेती और बीज उत्पादन पर एक दिवसीय जागरूकता सह प्रशिक्षण कार्यक्रम, एलगिरी पहाड़ियों के आदिवासी किसानों के लिए आयोजित किया गया था । इस कार्यक्रम तमिलनाडु के वेल्लोर जिले के तिरुपत्तूर तालुक के जोलार्पेट में दि. 26 मार्च 2015 को तहत राष्ट्रीय बीज परियोजना (फसल) के जनजातीय उप योजना तहत डॉ. के.रथिनवेल, प्रमुख वैज्ञानिक, के.क.अ.सं, कोयंबटूर द्वारा आयोजित किया गया । इस अवसर डॉ. के.पी.एम. दमयंति, प्रधान वैज्ञानिक, डॉ.एम.अमुथा, वैज्ञानिक, डॉ. दु.कॉजना, वैज्ञानिक एवं डॉ. के.रथिनवेल कपास की किस्मों, खेती प्रथाओं, मिट्टी और जलवायु आवश्यकताओं, जोविक कपास की खेती, कीट और रोग प्रबंधन, आई.पी.एम प्रौद्योगिकी, बीज उत्पादन के तरीके और सुरक्षित भंडारण पद्धति पर व्याख्यान दिया । इस प्रशिक्षण में 124 कपास किसानों ने भाग लिया जिनको सब्जी बीज और कीटनाशकों के रूप में जानकारी के रुप में प्रदान की गयी ।

## अन्य गितिविधियॉ

डॉ. एस. माणिक्कम, प्रधान वैज्ञानिक (पौधा प्रजनन), कुलपति, तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, कोयंबत्तूर द्वारा कैरियर में उन्नति योजना के तहत पौधा प्रजनन एवं आनुवांशिकी के वैज्ञानिकों की अवस्था 2 से 3 के पदोन्नति के चयन समिति में बाहरी विशेषज्ञ के रूप में कार्य करने के लिए नामित किए गये थे । समिति की बैठक माननीय कुलपति, तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, कोयम्बटूर की अध्यक्षता में दि. 28 मार्च 2015 को आयोजित की गयी ।

## कोयंबत्तूर में छात्रों का दौरा

सागायातोट्टम कृषि संस्थान एवं ग्रामीण विकास, ताक्कोलम, वेल्लोर जिले के कृषि डिप्लोमा के 4 छात्रों ने दि. 25.3.2015 को के.क.अ.सं, कोयंबत्तूर का दौरा किया । डॉ. (श्रीमती) एस. उषा रानी, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने संस्थान की उद्भव, उपलब्धियों और गतिविधियों को समझाया । छात्रों संस्थान के प्रायोगिक क्षेत्र "कपास छंटाई तकनीक" का भी दौरा किया ।

निर्मित एवं प्रकाशित: डॉ. के.आर.क्रांति, निदेशक, के.क.अ.सं, नागपुर
प्रमुख संपादक: डॉ. नंदिनी गोक्टे-नार्खडेकर
संपादकों: डॉ. जे.एन्नि शीबा, डॉ. विश्लेष नगरारे, डॉ. जे.अमुदा एवं डॉ. एम.शरवणन
जनसंचार माध्यम समर्थन एवं रुपांकन: डॉ. एम.सबेष एवं श्री. एस.सत्यकुमार
हिन्दी अनुवाद: श्रीमति. के.सुभश्री एवं डॉ. अ.हि.प्रकाश
निर्मित समर्थन: श्री. संजय कुश्वाहा

प्रमाण: कपास नई खोज अंक-4, खंड-3, 2015, भा.कृ.अनु.प. - केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

प्रकाशन टिप्पणी: यह समाचार पत्र आनलाईन http://www.cicr.org.in/News Letter.html में उपलब्ध है।
कपास नई खोज एक खुला उपयोग कपास समाचार पत्र है ।

कपास नई खोज - के.क.अ.सं, समाचार पत्र केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक संवाद-पत्र.
कार्यालय: पांजरी, एल.पी.जी. बॉटलिंग प्लॉन्ट के पास, वर्धा रॉड, नागपुर- 441 108.
दूरभाष: 07103-275536 फैक्स: 07103-275529; E-mail: cicrnagpur@gmail.com